OM 22 MAHARASHTRA final_Page 1 and 2 18/02/2015 17:49 Page 9

कथा सरिता

शील का घनीभूत रूप वीरता

महर्षि बोधायन के पास कई विद्यार्थी अध्ययन के लिए आते थे। उनका आश्रम विद्यार्थियों से भरा रहता और वे उनके सर्वांगीण विकास पर विशेष ध्यान देते थे। एक दिन वे शिष्यों के आग्रह पर आश्रम के निकट स्थित एक नदी तट पर गए। शिष्य गुरु के साथ नदी में बड़ी देर तक तैरते रहे। जब वे थक गए तो सब तट पर आए और भोजन के बाद वहीं विश्राम करने लेट गए। शीघ्र ही सबको नींद आ गई। इस प्रकार रात बीत गई। दूसरे दिन सुबह सबकी नींद खुली। गुरु बोधायन ने जागकर सबसे पहले एक वृक्ष के नीचे सो रहे शिष्य गार्ग्य को जगाने का विचार किया और उसकी ओर बढ़े। वहाँ जाकर देखा, शिष्य जाग रहा था और उसके पैर पर एक सर्प कुंडली मारकर सो रहा था।

यह दृश्य देखकर बोधायन को चिंता हुई। शिष्य ने गुरु से कहा- गुरुजी आप चिंता न करें। यह जागने पर स्वत: चला जाएगा। यह सुनकर बोधायन इंतज़ार करने लगे। कुछ देर बाद सांप जागा और झाड़ियों में चला गया। पांव में भयानक सर्प के लिपटे रहने पर भी शांत रहने वाले शिष्य को पाकर बोधायन और अन्य सहपाठी बहुत प्रसन्न हुए। गुरु ने उन्हें गले से लगा लिया और आशीर्वाद देते हुए कहा-बेटा तुम्हारा शील अक्षय बना रहे। गार्ग्य का एक मित्र मैत्रायण पास ही खड़ा था, उसे गुरु का आशीर्वाद समझ न आया। उसने पूछा-भगवन्, गार्ग्य के व्यवहार में साहस और दृढ़ता का परिचय मिलता है, फिर आपने शील अक्षुण्ण रहने का आशीर्वाद दिया। ऐसा क्यों? बोधायन ने कहा-वत्स! जिस प्रकार जल का ठोस रूप हिम है, उसी प्रकार शील का घनीभूत रूप साहस, दृढ़ता और धैर्य है। यदि व्यक्ति हर परिस्थिति में अपने शील की रक्षा के प्रति सजग रहे तो वह असाधारण वीरता को विकसित कर सकता है। सामान्यतया शील और धैर्य को वीरता का गुण नहीं माना जाता लेकिन यथार्थ में पराक्रम इन्हीं में बसता है।

प्रिय का कष्ट

बम्मेर पोतन्ना ने श्रीमद्भागवत का तेलुगु में रूपांतरण किया था। एक दिन वे भागवत अष्टम् स्कंध में गजेंद्र-मोक्ष प्रसंग में लिख रहे थे-ग्राह ने गजेंद्र का पैर पकड़ा और धीरे-धीरे उसे जलाशय में खींचने लगा। जब गजेंद्र प्राण बचाने के लिए भगवान विष्णु से प्रार्थना करने लगे तो भगवान तुरंत भागे। उन्हें सुदर्शन चक्र लेने का ध्यान ही नहीं रहा।

पोतन्ना का साला श्रीनाथ वहीं बैठा था। उसने वह वाक्य पढ़ा तो हंसने लगा। संत ने पूछा-तुम क्यों हंस रहे हो? श्रीनाथ बोला-आपने जो लिखा है वह काव्य में भले ही ठीक लगे, तर्क की दृष्टि से हास्यास्पद लगता है। पोतन्ना उस समय चुप रहे और बात आई-गई हो गई। दूसरे दिन पोतन्ना ने श्रीनाथ के बालक को खेलने के लिए दूर भेज दिया। वे आंगन में आए और एक बड़ा सा पत्थर कुएं में फेंक दिया। जोरदार आवाज़ आई तो घर से महिलाओं ने चिंतित होकर पूछा-क्या हुआ? चीखते हुए पोतन्ना ने कहा-श्रीनाथ दौड़ो, तुम्हारा बच्चा कुएं में गिर गया है। श्रीनाथ हड़बड़ाकर दौड़ता हुआ आया और कुएं में कूदने को तैयार हो गया। पोतन्ना ने उसे पकड़ लिया और कहा-मूर्ख, तुम कुएं में बिना सोचे-समझे कूद रहे हो। तुम तो तैरना भी नहीं जानते, फिर बच्चे को और स्वयं को बाहर कैसे निकालोगे? तुमने कोई रस्सी भी साथ नहीं रखी। श्रीनाथ रुंआसा होकर सोचने लगा। पोतन्ना ने कहा-घबराओ नहीं, तुम्हारा बच्चा मैदान में सकुशल खेल रहा है, लेकिन तुम्हारे व्यवहार में ही तुम्हारे उस दिन के प्रश्न का उत्तर छिपा हुआ है।

जब कोई किसी से प्रेम करता है तो प्रिय व्यक्ति के दु:ख में वह अपनी सुध-बुध खो बैठता है। ऐसे समय वह भला-बुरा, व्यवस्था-अव्यवस्था आदि का ध्यान नहीं रखता। यही कारण है कि प्रिय भक्त की पुकार सुनकर भगवान जब दौड़े तो अपने आयुध को साथ लेना भूल गए।

कद्दू की तीर्थ यात्रा

एक बार तीर्थ यात्रा पर जाने वाले लोगों के संघ ने संत तुकाराम जी के पास जाकर उनसे अपने साथ यात्रा पर चलने का आग्रह किया। संत तुकाराम जी ने उनके साथ चलने की असमर्थता जताई, किन्तु उन्होंने तीर्थ यात्रियों को एक कड़वा कद्दू देते हुए कहा: ''मैं तो आप लोगों के साथ नहीं आ सकता लेकिन आप इस कद्दू को साथ ले जाइए और जहाँ-जहाँ भी स्नान करें, इसे भी पवित्र जल में स्नान करा लायें।''

लोगों ने उनके गुढ़ार्थ पर गौर किये बिना ही वह कद्दू ले लिया और जहां गए, स्नान किया, वहाँ-वहाँ उसे भी स्नान करवाया। मंदिर में जाकर दर्शन किया तो उसे भी दर्शन करवाया। इस तरह यात्रा पूरी करके सब वापस आए तो उन सभी यात्रियों को प्रीतिभोज पर आमंत्रित किया गया और यात्रियों के लिए विशेष रूप से कद्दू की सब्जी बनवायी गयी। सभी यात्रियों ने खाना शुरु किया और सबने कहा कि यह सब्जी तो कड़वी है। ''तुकाराम ने आश्चर्य से कहा, ये तो उसी कद्दू से बनी सब्जी है जो तीर्थ और स्नान कर आया है। बेशक ये तीर्थाटन के पूर्व कड़वा था, मगर तीर्थ दर्शन तथा स्नान के बाद भी इसमें कड़वाहट है ही।''

यह सुनकर सभी यात्रियों को बोध हो गया कि 'हमने सिर्फ तन का तीर्थाटन किया है, मन का नहीं।' अपने मन को एवं स्वभाव को यदि सुधारा नहीं तो तीर्थ यात्रा का अधिक मूल्य नहीं है। हम भी एक कड़वे कद्दू जैसे कड़वे रहकर ही वापस आये हैं।

सज्जनता का प्रभाव सूक्ष्म

एक राजा को कोई असाध्य बीमारी हो गई। वैद्यों को बताया तो उन्होंने रोग को कोढ़ बताया। कई निदान बताए गए, लेकिन किसी से कोई असर होते न दिखा। राजवैद्य ने कहा-महाराज, इस रोग का एक ही इलाज है। यदि आप राजहंस के मांस का भक्षण करें तो इस बीमारी से मुक्ति पा सकते हैं। राजहंस को पाना आसान न था। किसी जानकार ने बताया कि वे तो मानसरोवर में पाए जाते हैं, वहाँ कोई विरला साधु-संत ही जा पाता है। कुछ साधुओं से राजा को धर्म का स्वरूप बताकर कुछ राजहंस ले आने के लिए कहा गया, लेकिन कोई भी इसके लिए तैयार न हुआ। अंत में एक बहेलिया साधु का भेष धारण कर मानसरोवर जाकर राजहंस लाने के लिए राज़ी हुआ।

मानसरोवर में राजहंस साधु-संतों से घुले-मिले थे। वे न किसी से भयभीत होते थे, न अजनबियों को देख दूर भागते थे। बहेलिये ने बिना किसी प्रयत्न के बहुत से राजहंसों को पकड़ लिया और उन्हें राजा के सामने प्रस्तुत कर दिया। राजहंसों का सहज स्वभाव देख राजा के मन पर भारी प्रभाव पड़ा। उसने सोचा जो जीव संतों के प्रभाव से इस तरह अहिंसा में प्रतिष्ठित हो गए हैं कि उन्हें अपने घातक शत्रु से भी भय नहीं लगता, खुद की मृत्यु के भय से उन्हें मारना कितना बेतुका है। उसने राजहंसों को मुक्त कर दिया। यह देखकर बहेलिये के मन पर भी भारी प्रभाव पड़ा। उसने सोचा राजहंसों के स्वभाव से प्रभावित हो राजा अपने रोग के निदान हेतु हिंसा से विरत हो गया, वे राजहंस उसके झूठे संतवेश के प्रभाव से ही निर्भय हो गए, वह संत भाव यदि वास्तव में उपलब्ध हो जाए तो कितना शांतिकारक होगा। बहेलिया सब कुछ त्यागकर जंगल चला गया और साधु बन गया। संत स्वभाव की महिमा ऐसी ही है। ज्ञानी-मानी, पंडित-मूढ़ ही नहीं पशु-पक्षी तक उससे अप्रभावित नहीं रह पाते। वे संपर्क में आने वाले हर जीव में आमूल परिवर्तन कर देते हैं।

कटघोरा। 'आध्यात्मिक समागम' का उद्घाटन करते हुए नगर पालिका परिषद अध्यक्षा ललिता डिक्सेना, उपाध्यक्ष पवन अग्रवाल, नगर निरीक्षक गोपाल वैश्य, ब्र.कु. रुक्मणि, ब्र.कु. शशि तथा ब्र.कु. राजश्री।

सेन्दुरनी-महा.। जल संपदा मंत्री गिरीश भाऊ महाजन को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. वर्षा।

वार्शी। वाहतूक अधिकारी विजय पोडे को ओमशान्ति मीडिया भेंट करते हुए ब्र.कु. मोहन साथ हैं वजिनथभाई।

मुम्बई-डोम्बीवली। स्मृति दिवस पर ब्रह्माबाबा को श्रद्धांजली अर्पित करते हुए समाज सेविका सरोज नेरुरकर, गांवदेवी स्कूल ट्रस्टी केशव भाई, ब्र.कु. शकू, विशाल मनियार, डॉ. रूपम जोशी तथा अन्य।

राजकोट-गुज.। ब्रह्मा बाबा के स्मृति दिवस पर साकार बाबा के साथ का अनुभव सुनाते हुए ब्र.कु. भारती। साथ हैं ब्र.कु. रेखा तथा ब्र.कु. आरती।

वैराग-महा.। बस डेपो में स्वच्छता अभियान का शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. सोमप्रभा, ब्र.कु. उषा, ब्र.कु. शिवकन्या, पुलिस निरीक्षक ऐकेरे, ब्र.कु. मोहन, दादा मोहिते तथा अन्य।

दीव। बच्चों के लिए आयोजित 'मेमोरी मैनेजमेंट' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु.करण व ब्र.कु.गीता,अंबाला, एन.सी.सी. ऑफिसर वंदना बहन, एन.सी.सी. की कन्याएं,बच्चे, शिक्षक प्रतिभा बहन व अन्य।